भारतीय भक्ति आन्दोलन और पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन में शंकरदेव और माधवदेव का योगदान

सम्पादक - प्रोफेसर दिलीप कुमार मेधि

शब्द-भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)
गुवाहाटी, असम

भारतीय भक्ति आन्दोलन और पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन में शंकरदेव और माधवदेव का योगदान

सम्पादक - प्रोफेसर दिलीप कुमार मेधि

शब्द-भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)
गुवाहाटी, असम

भारतीय भक्ति आन्दोलन और पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन में शंकरदेव और माधवदेव का योगदान

(राष्ट्रीय संगोष्ठी, 2013 में प्रस्तुत किए गए शोधपरक आलेखों का संकलन)

सम्पादकीय बोर्ड :-

मुख्य सम्पादक : प्रोफेसर अनंत कुमार नाथ

सम्पादक : प्रोफेसर दिलीप कुमार मेधि

सहयोगी सम्पादक : डॉ. चन्द्रलेखा शर्मा
डॉ. संजय सिंह
श्री दिव्यज्योति डेका
सुश्री हीराबाला दास
श्री अजय कुमार

विशेष सहयोग : पूजा सिंह, नमितारानी पॉल, मौसुमी चौधुरी, दिगंत डेका, मनोरंजन प्रसाद, बर्णाली तंतेकर, खर्गेस्वर बायन, उत्तम बायन, लाचित दास।

प्रथम संस्करण : 2015, January

ISBN : 978-81-930725-0-9

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system & transmitted in any form or by any means, electronic, photocopying, recording or otherwise without the prior written permission of the publisher.

प्रकाशक : शब्द-भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र), गुवाहाटी, असम

मुद्रण : PRINT POINT, Jayanagar Chariali, Khanapara, Guwahati - 781022, Phone - 9864125972

मूल्य : रु. 250-/ (दो सौ पचास रुपए) मात्र

भारतीय भक्ति आन्दोलन और पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन में शंकरदेव और माधवदेव का योगदान

(राष्ट्रीय संगोष्ठी, 2013 में प्रस्तुत किए गए शोधपरक आलेखों का संकलन)

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	भारतीय धर्म-दर्शन की परंपरा और भक्ति आंदोलन	1
2.	भारतीय भक्ति आंदोलन का प्रभाव – एक परिदृश्य	13
3.	भक्ति आन्दोलन में श्रीमंत शंकरदेव का योगदान	23
4.	भारतीय भक्ति आन्दोलन में शंकरदेव का योगदान	29
5.	पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आंदोलन में महापुरुष शंकरदेव का योगदान	36
6.	शंकरदेव और उनके सामाजिक विचार	41
7.	असम के वैष्णव भक्ति आन्दोलन में श्रीमंत शंकरदेव का योगदान	52
8.	भक्ति आंदोलन में माधवदेव का योगदान और इसकी प्रासंगिकता	60
9.	मध्यकालीन भारतीय भक्ति आंदोलन	69
10.	भारतीय भक्ति आंदोलन	73
11.	सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं असम का भक्ति आंदोलन	76
12.	भक्ति आंदोलन में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव का योगदान	88
13.	भक्ति आन्दोलन में महापुरूष शंकरदेव का योगदान	98
14.	नव-वैष्णव आन्दोलन और श्रीमन्त शंकरदेव : आज के संदर्भ में	105
15.	श्री शंकरदेव के साहित्य में समाज-दर्शन	117
16.	नामघोषा : भक्त-हृदय की पुकार	128

17.	मध्यकालीन कृष्ण भक्ति और श्रीमंत शंकरदेव	135
18.	**मध्यकालीन भक्ति आंदोलन**	**137**
19.	भक्ति आन्दोलन का सांस्कृतिक महत्व	141
20.	भारतीय वैष्णव भक्ति के सन्दर्भ में आलवार	144
21.	माधवदेव की 'नामघोषा' भक्तिधारा का अनुपम उपहार	155
22.	असम में नव-वैष्णववाद : सामाजिक पृष्ठभूमि के विचार	159
23.	भक्ति आंदोलन में पूर्वोत्तर के अन्य संतों/भक्तों का योगदान	167 मोरा दास
24.	श्रीमंत शंकरदेव का साहित्य एवं समन्वय चेतना	172
25.	**आज के संदर्भ में असम, भक्ति आन्दोलन और शंकरदेव : एक अवलोकन**	**178**
26.	**गुरुचरित-कथा का सामाजिक महत्व**	**185**
27.	**नामधर्म तथा शंकर-माधव का भक्ति रस**	**190**
28.	**भारतीय भक्ति आंदोलन तथा पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आंदोलन में श्रीमंत शंकरदेव का योगदान**	**194**
29.	**भक्ति आंदोलन में शंकरदेव का योगदान**	**204**
30.	**महापुरुष माधवदेव एवं तुलसीदासः एक तुलनात्मक विवेचन**	**220**
31.	शंकरदेव के अंकिया नाटों का कथ्य : कथावस्तु के विशेष संदर्भ में	230
32.	**उत्तर भारत के भक्ति आंदोलन में दक्षिण का योगदान : एक मूल्यांकन**	**240**
33.	भारतीय भक्ति आन्दोलन के प्रसार में उत्तर भारतीय सन्तों का योगदान	253
34.	**महापुरुष शंकरदेव की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि बरदोवा : एक विकास-यात्र**	259
35.	**भक्ति आंदोलन में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव का योगदान**	**268**
36.	**भक्ति आन्दोलन में शंकरदेव का योगदान**	280
37.	**माधव कन्दलि कृत रामायण**	285
38.	**मध्यकालीन भारतीय भक्ति आंदोलन**	**289**

सम्पादकीय

श्रीमंत शंकरदेव को छोड़कर असमीया भाषा-साहित्य-संस्कृति की हम कल्पना ही नहीं कर सकते हैं । मध्ययुगीन भारतीय भक्ति-आंदोलन के नेताओं में से अन्यतम एक हैं महापुरूष श्रीमंत शंकरदेव । असम के नव-वैष्णव आंदोलन (एक शरणीया नाम-धर्म) के जनक शंकरदेव ने केवल पतनोन्मुखी असमीया समाज का उद्धार किया, बल्कि पहली बार असम को भारत के साथ जोड़ने का प्रयत्न भी किया । दो बार लम्बी अवधि तक भारत भ्रमण करनेवाले, सत्-संगति का फायदा उठानेवाले शंकरदेव ने न सिर्फ असम या पूर्वांचल के, वरना पूरे भारतवर्ष के लोगों को भक्ति-रस का पान करवाया और उनके कल्याण हेतु अपने जीवन को न्यौछावर किया । दरअसल, जनकल्याण ही उनका मुख्य उद्देश्य रहा है।

शंकरदेव में तथाकथित आंचलिकतावाद नहीं है, जातियतावाद है और उनका जातियतावाद राष्ट्रीयतावाद में समाहित होकर अंतराष्ट्रीयतावाद की ओर उन्मुख है । नदी जैसे समुद्र में, समुद्र जैसे महासमुद्र में विलीन हो जाता है, वैसे ही शंकर की जातीय प्रेम-सरिता भी राष्ट्रीय प्रेमधारा में समाहित होकर महार्णव की तरफ धावित है । बहुत पुण्य के बाद मनुष्य जन्म मिलता है, और उससे भी बढ़कर यानी महापुण्य के बाद किसी को भारत में जनम मिलता है -

जानिया सबे एड़ा भाषभूष ।
भाग्ये से भारते भैला मानुष ।।

(कीर्तनघोषा, शंकरदेव)

ऐसी ही विचारधाराओं ने शंकरदेव को जातीय नायक से उन्नीत कर राष्ट्रीय महानायक के रूप में प्रतिष्ठित किया । शंकरदेव असम के होते हुए भी असम के नहीं रहे, भारत के होते हुए भी भारत के नहीं रहे; पूरे संसार के हो गए । संसार का कल्याण, मानव-मात्र का उत्थान - शंकर-वाणियों का उद्देश्य रहा है।

असम विभिन्न जाति-उपजातियों की भूमि रही है । लगभग 200 जाति-उपजातियों के निवासियों को एकता की जंजीर से बांधना कोई साधारण काम नहीं था । मगर इस असाधारण को साधारण बनाने में शंकरदेव को पूरी तरह मदद मिली थी- उनके अन्यतम शिष्य, प्राण-बान्धव, चिरकुमार महापुरूष माधवदेव से । गुरू-शिष्य दोनों ने भक्ति-धर्म से असमीया समाज को पुनरूज्जीवित किया, नया जीवन दान दिया । इसी को ध्यान में रखते हुए माधवदेव की तरह हम भी सहर्ष स्वीकार कर सकते हैं कि असमीया जाति के लिए अगर कोई गुरू है, तो वे सिर्फ, सिर्फ शंकरदेव ही हैं -

श्रीमंत शंकर
हरि भकतर
जाना येन कल्पतरू ।
ताहांत बिनाइ
नाइ नाइ नाइ
आमार परम गुरू ।।

(नामघोषा, माधवदेव)

पर अफसोस की बात है, इतना होने के बावजूद भी शंकर-माधव को जितनी ख्याति मिलनी चाहिए थी, नहीं मिली । जितना आदर-सम्मान देना चाहिए था, दिया नहीं गया । इसके लिए जिम्मेदार हम ही लोग हैं।

किसी एक कवि ने बड़े अफसोस के साथ ठीक ही कहा था - 'जहाँ के लोग नंगे होते हैं, वहाँ धोबी का क्या काम ?' दूसरों को कुछ कहने से पूर्व या इल्जाम लगाने से पहले खूद से पुछना चाहिए- 'मैंने उनके प्रति क्या किया ?' क्या कृतघ्नता जातिद्रोह नहीं है ? क्या जन्मदाता को भूल जाना अपने लिए एक कलंक नहीं है ?

इन सवालों ने न सिर्फ हमें झकझोर दिया, बल्कि 'शब्द-भारती' को भी बेचैन कर दिया । देर से ही सही, 'शब्द-भारती' द्वारा 'भारतीय भक्ति आंदोलन और पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आंदोलन में शंकरदेव और माधवदेव का योगदान' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी एक प्रकार से उभय महापुरूषों के प्रति श्रद्धार्घ्य है । प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित प्राय: सभी निबंध संगोष्ठी के शोध-पत्र हैं । शंकरदेव की विचारधाराओं को, चिंताओं को, आदर्शों को, सिद्धांतों को, जनकल्याणकामी वाणियों को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने के लिए इस पुस्तक के जरिए थोड़ी-सी कोशिश की गई है । इस पुनीत कोशिश में जिन महानुभवों का सान्निध्य मिला, सहयोग प्राप्त हुआ, वे सभी साधुवाद के पात्र हैं ।

जिन लोगों के, शोधकर्ताओं के शोध-पत्रों से इसे पुस्तक के रूप में अनजाम दिया गया, उन सभी विद्वानों, बुद्धिजीवियों, शोधार्थियों को 'शब्द-भारती' नमन करती है । साथ ही इसका जिक्र करना भी मुनासिब होगा कि लेख में अंतर्निहित कथ्य एवं तथ्य लेखक का सम्पूर्ण रूप से व्यक्तिगत है । उसके साथ सम्पादक का कोई संबंध नहीं।

अनिच्छाकृत भूलें कहीं-कहीं अवश्य हो सकती हैं । तत्पश्चात् सहृदय पाठकों का सहयोग, सहानुभूति, परामर्श 'शब्द-भारती' के लिए

'आकाश द्वीप' बनकर, पाथेय बनकर रहेगा । पाठकों को थोड़ी-सी कृपादृष्टि ही हमारे लिए प्रोत्साहन है, जीने की राह है, तिनके का सहारा है ।

जयतु शंकर माधव ।

जयतु असम-भारत ।।

स्थान : गुवाहाटी

दिनांक : 26.11.2015

सम्पादक

(बीज भाषण)

भारतीय धर्म-दर्शन की परंपरा और भक्ति आंदोलन

प्रोफेसर अनंत कुमार नाथ

भारतीय परंपरा में जीवन के चार पुरुषार्थ माने गए हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ये जीवन का मूल तत्व या पदार्थ भी हैं, जिन्हें प्राप्त कर लेना मानव जीवन की वास्तविक उपलब्धि कही जा सकती है। इनमें से पहले तीन की प्राप्ति इसी जीवन में संभव है, जबकि चौथे के लिए मृत्यु के पार दस्तक देना जरूरी है। इस बारे में आगे चर्चा करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि मोक्ष क्या है। भारतीयपरंपरा में इसका सीधा सीधा मतलब है मुक्ति, यानी संसार के आवागमन से दूर हो जाना। सामान्यत इसका अर्थ उस स्थिति से लिया जाता है जब आत्मा परमात्मा में मिलकर उसका अभिन्न-अटूट हिस्सा बन जाती है! दोनों के बीच का सारा द्वैत विलीन हो जाता है। यह जल में कुंभ और कुंभ में जल की सी स्थिति है। जल घड़े में है, घड़ा जल में। घड़ा यानी पंचमहाभूत से बनी देह। पानी की दो सतहों के बीच फंसी मिटटी की पतली सी क्षणभंगुर दीवार, जिसकी उत्पत्ति भी जल यानी परमतत्त्व के बिना संभव नहीं।

वेदांत की भाषा में जो माया है। तो उस पंचमहाभूत से बने घट के मिटते ही उसमें मौजूद सारा जल सागर के जल में समा जाता है। सागर में मिलकर उसी का रूपधारण कर लेता है। यही मोक्ष है जिसका दूसरा अर्थ संपूर्णता भी है, आदमी को जब लगने लगे कि जो भी उसका अभीष्ट था, जिसको वहप्राप्त करना चाहता था, वह उसको प्राप्त हो चुका है। उसकी दृष्टि नीर-क्षीर का भेद करने में प्रवीण हो चुकी है। जिसके

शोध आलेख-22

भक्ति आंदोलन में पूर्वोत्तर के अन्य संतों/भक्तों का योगदान

*मीरा दास

आंदोलन का अर्थ होता है- आलोड़न या जागरण। इसलिए भक्ति के क्षेत्र में किया गया आंदोलन को भक्ति आंदोलन माना जाता है। जब पूरे भारतवर्ष में भक्ति आंदोलन का लहर छा गया था, उस समय पूर्वोत्तर भारतवर्ष के भू-भाग भी इस आंदोलन से अछुता न रहा। पूर्वोत्तर भारत के वृहत्तर जाति गठन तथा भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के प्राणप्रतिष्ठा करने वालों में से सर्वप्रथम महापुरुष शंकरदेव तथा माधवदेव का नाम आता है। इन दोनों के अवदान के कारण ही पूर्वोत्तर की संस्कृति ने विशिष्ठता प्राप्त की। मध्ययुगीन असम में शंकरदेव द्वारा प्रतिष्ठित भक्ति आंदोलन को आगे बढ़ाने में माधवदेव के अलावा अन्य सन्त-महन्त और भक्तों का भी बड़ा योगदान रहा । शंकरदेव द्वारा परिचालित भक्ति आंदोलन का मूल उद्देश्य था- एक सुन्दर समाज का गठन । इसलिये उन्होंने पूर्वोत्तर के अनेक जाति, धर्म, भाषा से ऊपर उठकर ब्राह्मण समूदाय के महेन्द्र कन्दली, राम सरस्वती, कैवर्त समूदाय के पूर्णानन्द, वैश्य के हरिदास, कछारी के रमाई, नगा के नरोत्तम, गारो के गोविन्द, यवन के चान्दसाई, भुटीया के दामोदर, आहोम के नरहरि आदि संतों को लेकर एकशरण नाम धर्म प्रचार के जरिये भक्ति आंदोलन को मजबूत बनाया । पूर्वोत्तर भारत के भक्ति आंदोलन के उल्लेखनीय संन्तों के बारे में नीचे विचार-विमर्श किया जाता है।

माधवदेव– माधवदेव शंकरदेव के प्रिय शिष्य तथा सेवक थे। उनका भक्ति आंदोलन को सार्थक रूप देने में बहुत बड़ा हाथ था। गुरुसेवा में कभी कमी न आये इसलिये माधवदेव ने कभी शादी नहीं की। अपनी निष्ठ, गम्भीर भक्ति तथा प्रतिभा के कारण

ही विशिष्ट साहित्यकार लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने शंकर-माधव के मिलन को 'मणिकांचन संयोग' नाम दिया था। श्रीमंत शंकरदेव के देहावसान के बाद उनके कार्यों के उत्तराधिकारी माधवदेव ही बनें, जिसे उन्होंने ईमानदारी से निर्वाह किया और भक्ति आंदोलन को गतिशील बनाये रखा।

अनन्त कन्दली- अनन्त कन्दली, रत्न पाठक के पुत्र थे जो भागवत के ज्ञाता थे। 'कथा गुरुचरित' के अनुसार अनन्त कन्दली बरदोवा में महापुरूष शंकरदेव के शरण में आये थे। रामायण, दशम, स्कन्ध भागवत, वृत्तासुर वध और कुमार हरण आदि उनकी प्रधान रचनाए हैं। कुमार हरण नाटक में उनकी काव्य प्रतिभा बहुत ही सुंदरता से मुखरित हुई है। वृत्तासुर वध की कथा ऋषि दधीचि के आत्मत्याग के संबंध में है।

दामोदर देव- दामोदर देव के जन्म काल के बारे में स्पष्ट मत नहीं है। इनके पिता शंकरदेव के मित्र थे। दामोदरदेव नाम भी शंकरदेव का दिया हुआ माना जाता है। शंकरदेव के सभी चरित ग्रंथों में इनके बारे में उल्लेख मिलता है। इन्होंने अपनी निजत्व को छोड़ शंकरदेव की शिष्यत्व ग्रहण किया। जब शंकरदेव पाठबाउसी छोड़कर कोचविहार चले गये तब उन्हें पाटबाउसी में भक्ति-धर्म प्रचार का कार्यभार सौंपा था।

नारायणदास ठाकुर आता- इनका जन्म उत्तर गुवाहाटी के मालो में हुआ था। शंकरदेव के दोनो नाती को धार्मिक गुरु बनाने में इन्हीं का हाथ था। नारायणदास शंकरदेव के प्रिय शिष्य थे। इन्होंने भक्ति-धर्म प्रचार के क्षेत्र में माधवदेव और पुरुषोत्तम ठाकुर को काफी सहायता की थी। इन्होंने बारादी, मइनाबरी और जनीया सत्र स्थापन के जरिये भक्ति आंदोलन में अपना योगदान दिया था।

राम सरस्वती- राम सरस्वती कवि चुड़ामणि के द्वितीय पुत्र थे। प्राचीन असमिया कवियों में से इन्होंने ही सबसे अधिक पदों की रचना की। महाराज नरनारायण की अनुप्रेरणा से इन्होंने महाभारत के ज्यादातर श्लोक असमिया में अनुवाद किया।

महाराज नरनारायण की राजसभा में ही इनकी मुलाकात महापुरूष शंकरदेव के साथ हुआ। नरनारायण के बाद परीक्षित नारायण तथा बलि नारायण के समय में भी इन्हे राज आग्रह प्राप्त हुआ था। अपने साहित्यिक कर्मो कम जरिए भक्ति-धर्म के आदर्श को स्थापित करने में राम सरस्वती के काव्य काफी सफल हैं।

रत्नाकर कन्दली- रत्नाकर कन्दली शंकरदेव के ब्राह्मण शिष्य थे। माघ महीने में सत्र में गीता पाठ तथा व्याख्या करना इनका मूल काम था। कीर्तन घोषा के 'सहस्र-नाम वृतान्त' की रचना इन्होंने किया था। कीर्तन की तरह लिखित इस ग्रन्थ में गंभीर भक्ति दृष्टिगोचर होती है।

श्रीधर कन्दलि– इनके दो प्रमुख ग्रन्थ हैं- 'काणखोवा' और 'घुनुचा-कीर्तन'। 'काणखोवा' में विष्णु अवतार को सरस, प्रांजल तथा मर्मस्पर्शी रूप का वर्णन किया गया है। 'जगन्नाथ रथजात्रा' उत्सव के आधार पर स्कन्दपुराण के उत्कल खण्ड कथा को 'घुनुचा कीर्तन' में लिखा गया है।

भट्टदेव- शंकरोत्तर काल में वैकुण्ठनाथ भागवत भट्टाचार्य यानी भट्टदेव मुख्य हैं। इन्हें असमिया गद्य साहित्य का जन्मदाता माना जाता है। भागवत और शास्त्रकथा व्याख्या करने में पारंगत, कविरत्न और भागवत भट्टाचार्य उपाधि से विभूषित भट्टदेव की प्रमुख रचनाओं में कथा-गीता, कथा-भागवत, कथा रत्नावली, शरणमालिका, गुरुवंशावली, प्रसंगमाला आदि हैं। इसके अलावा इन्होंने गीता, भागवत तथा रत्नावली को असमिया में रूपान्तरित करके असमिया भाषा को उच्च स्तर पर पहुँचा दिया था।

गोपाल आता- माधवदेव के मुख्य शिष्यों में एक गोपाल आता का भी नाम है। वे पौराणिक कथा तथा धर्म विषयक कथाओं को बहुत ही मर्मस्पर्शी ढंग से सुनाने में सक्षम थे, जिसके कारण उन्हें कथा सागर नाम से भी जाना जाता है। उद्धव बयान, जन्मयात्रा और नन्दोत्सव इन्हीं के द्वारा रचित अंकिया नाट हैं।

गोपाल मिश्र- दामोदरदेव के शिष्य गोपाल मिश्र खुदीया सत्र के प्रतिष्ठाता थे।

रामचरण ठाकुर– माधवदेव के अपने भांजे थे। उन्हें माधवदेव ने शंकरदेव के द्वारा रचित 'कीर्तन' के पदों को एकत्रित करने का काम सौंपा था। ठाकुर ने गुरुचरित के अनेक पद, रत्नाकर के पद और कंसबध नाटक की रचना की थी।

भूषण द्विज- ब्रजावली में लिखित इनका एकमात्र नाटक 'अजामिल उपाख्यान' है। यहीं रचना द्विज को सफल नाटककार का आसन दिलाने में समर्थ है। रचना के विनय और भक्ति के पदो में इनके भक्त मन की सहज अभिव्यकित प्रकट होती है।

दैत्यारि ठाकुर- इनको शंकरदेव नाट्य-परम्परा का अन्तिम प्रभावशाली नाटककार माना जाता है। इनके दो नाटक नृसिंह यात्रा, स्यमन्तक हरण उल्लेखनीय हैं।

रामराय- रामराय दामोदरदेव के प्रधान शिष्य लोच सत्र के प्रतिष्ठापक अर्जुनदेव के शिष्य थे। 'कथा गुरुचरित' के अनुसार कोच राजा ने इन्हें 'रामराय' की उपाधि प्रदान किया था। ऐसा माना जाता है कि 'पत्नी प्रसाद' और 'रामविजय' नाटक के अलावा अन्य चार नाटक शंकरदेव ने इन्हीं अनुरोध पर ही लिखा था।

चन्दसाई- ये कोच राजा के खलिफा थे। इन्होंने शंकरदेव का शिष्यत्व ग्रहण किया था। वे भक्तों की टोली में अन्य पण्डितों के साथ धर्मशास्त्र पर चर्चा किया करते थे। धर्मनिरपेक्ष असमिया जाति गठन में चन्दसाई तथा उनके शिष्य की भूमिका उल्लेखनीय है।

मथुरादास बुढ़ा आता- पहले चैतन्य पन्थी में रहने वाले मथुरादास बुढ़ा आता बाद में माधवदेव के प्रिय शिष्य बन गए थे। माधवदेव ने इन्हें 'बरपेटा सत्र' का दायित्व भार सौंपा था। आता के एक प्रिय शिष्य कजला माझि थे, जिनकी पत्नी ने संकटकाल में सत्र का प्रख्यात 'अक्षय गुरु वन्ति' का प्रतिपालन किया था, जो आज तक निरंतर प्रकाशित है।

श्रीराम आता- 'सुभद्रा हरण' नाटक के रचयिता श्रीराम आता को गोपाल आता की मृत्यु के पश्चात कालाझार सत्र का अधिकारी बनाया गया था।

रामानन्द द्विज – श्रीराम आता के द्वितीय पुत्र तथा इन्हीं के शिष्य रामानन्द द्विज के दो ग्रन्थ 'प्रेम कलह' और 'स्फुट गीत' हैं। विषय-वस्तु के दृष्टि से इनके गीत माधवदेव के गीतों से मिलते-जुलते हैं।

गुरु शंकरदेव ने शुद्ध तथा सुपरिकल्पित समाज गठन करने का जो संकल्प हाथ में लिया था वह उनके महाप्रयाण के बाद थोड़ा शिथिल पड़ गया था, परन्तु उनके शिष्य परम्परा ने भक्ति आंदोलन को निश्चय ही आगे बढ़ाया है। उक्त भक्ति आंदोलन को आगे बढ़ाते हुए सन 1930 में नगाँव के पलाशानि गाँव में रमाकान्त मुक्तियार आता तथा अन्य कुछ महान सन्तों के प्रयास से 'श्रीमन्त शंकरदेव संघ' स्थापित हुआ। इस संघ ने आज भी असम तथा पूर्वोत्तर के जातीय जीवन और भक्ति आंदोलन को बरकरार रखा है।

******

शब्द-भारती (हिन्दी संसाधन केन्द्र)
गुवाहाटी, असम

ISBN 978-81-930725-0-9